

## चार मूर्ख पंडित

एक स्थान पर चार ब्राह्मण रहते थे। चारों विद्याभ्यास के लिये कान्यकुब्ज गये। निरन्तर १२ वर्ष तक विद्या पढने के बाद वे सम्पूर्ण शास्त्रों के पारंगत विद्वान् हो गये, किन्तु व्यवहार-बुद्धि से चारों खाली थे। विद्याभ्यास के बाद चारों स्वदेश के लिये लौट पडे। कुछ देर चलने के बाद रास्ता दो ओर फटता था। किस मार्ग से जाना चाहिये इसका कोई भी निश्चय न करने पर वे वहीं बैठ गये। इसी समय वहां से एक मृत वैश्य बालक की अर्थी निकली।

अर्थी के साथ बहुत से महाजन भी थे। 'महाजन' नाम से उनमें से एक को कुछ याद आ गया। उसने पुस्तक के पन्ने पलटकर देखा तो लिखा था - "महाजनो येन गतः स पन्थाः"

अर्थात् जिस मार्ग से महाजन जाये, वही मार्ग है। पुस्तक में लिखे को ब्रह्म-वाक्य मानने वाले चारों पंडित महाजनो के पीछे-पीछे श्मशान की ओर चल पडे।

थोड़ी दूर पर श्मशान में उन्होंने एक गधे को खडा हुआ देखा। गधे को देखते ही उन्हें शास्त्र की यह बात याद आ गई "राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः"- अर्थात् राजद्वार और श्मशान में जो खडा हो, वह भाई होता है। फिर क्या था, चारों ने उस श्मशान में खडे गधे को भाई बना लिया। कोई उसके गले से लिपट गया, तो कोई उसके पैर धोने लगा।

इतने में एक ऊँट उधर से गुज़रा। उसे देखकर सब विचार में पड गये कि यह कौन है। १२ वर्ष तक विद्यालय की चारदीवारी में रहते हुए उन्हें पुस्तकों के अतिरिक्त संसार की किसी वस्तु का ज्ञान नहीं था। ऊँट को वेग से भागते हुए देखकर उनमें से एक को पुस्तक में लिखा यह वाक्य याद आ गया- "धर्मस्य त्वरिता गतिः"- अर्थात् धर्म की गति में बड़ा वेग होता है। उन्हें निश्चय हो गया

कि वेग से जाने वाली यह वस्तु अवश्य धर्म है। उसी समय उनमें से एक को याद आया- "इष्टं धर्मेण योजयेत् " -- अर्थात् धर्म का संयोग इष्ट से करादे। उनकी समझ में इष्ट बान्धव था गधा और ऊँट या धर्म; दोनों का संयोग कराना उन्होंने शास्त्रोक्त मान लिया। बस, खींचखांच कर उन्होंने ऊँट के गले में गधा बाँध दिया। वह गधा एक धोबी का था। उसे पता लगा तो वह भागा हुआ आया। उसे अपनी ओर आता देखकर चारों शास्त्र-पारंगत पंडित वहाँ से भाग खड़े हुए।

थोड़ी दूर पर एक नदी थी। नदी में पलाश का एक पत्ता तैरता हुआ आ रहा था। इसे देखते ही उनमें से एक को याद आ गया- "आगमिष्यति यत्पत्रं तदस्मांस्तारयिष्यति" अर्थात् जो पत्ता तैरता हुआ आयागा, वही हमारा उद्धार करेगा। उद्धार की इच्छा से वह मूर्ख पंडित पत्ते पर लेट गया। पत्ता पानी में डूब गया तो वह भी डूबने लगा।

केवल उसकी शिक्षा पानी से बाहिर रह गई। इसी तरह बहते-बहते जब वह दूसरे मूर्ख पंडित के पास पहुँचा तो उसे एक और शास्त्रोक्त वाक्य याद आ गया- "सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः"-- अर्थात् सम्पूर्ण का नाश होते देखकर आधे को बचाले और आधे का त्याग कर दे। यह याद आते ही उसने बहते हुए पूरे आदमी का आधा भाग बचाने के लिये उसकी शिखा पकड़कर गरदन काट दी। उसके हाथ में केवल सिर का हिस्सा आ गया। देह पानी में बह गई।

उन चार के अब तीन रह गये। गाँव पहुँचने पर तीनों को अलग-अलग घरों में ठहराया गया। वहाँ उन्हें जब भोजन दिया गया तो एक ने सोमियो को यह कहकर छोड़ दिया -- "दीर्घसूत्री विनश्यति"- -अर्थात् दीर्घ तन्तु वाली वस्तु नष्ट हो जाती है। दूसरे को रोटियाँ दी गईं तो उसे याद आ गया -- "अतिविस्तारविस्तीर्णं तद्भवेन्न चिरायुषम्" अर्थात् बहुत फैली हुई वस्तु आयु को घटाती है। तीसरे को छिद्र वाली वटिका दी गयी तो उसे याद आ गया- 'छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति'--

अर्थात् छिद्र वाली वस्तु मे बहुत अनर्थ होते है। परिणाम यह हुआ कि तीनो की जगहँसाई हुई और तीनो भूखे ही रहे।

सीख : व्यवहार-बुद्धि के बिना पंडित भी मूर्ख ही रहते है। व्यवहार बुद्धि एक ही होती है। सैंकडो बुद्धियाँ रखने वाला सदा डांवाडोल रहता है।

## गार भक्त पंडित

एक भक्त पर गार गुरुद्वारा रक्तु घाटार विष्टुष्टुम क लिय कानकुतुस्रवा निरन्तर ०३ वरुडक विष्टु पढन के गार व भक्तु माभुके पारंगत विष्टुना रुगेव, किन्तु वरुकार-गम्भीर गार पीली घाविष्टुष्टुम क गार गार भक्तु क लिय लीए पडा केकु रर एलन के गार गारु रर उर उर उर घा। किम भक्त मरुन गारुिष उभका करी ही निमञ्चन करन पर व वकी गठै गवा उभी मभय वरुं भक्ति भु वमै गालक की मुरी निकली।

मुरी क भेष गुरु म भेकाएन ही घा भेकाएन' नाम म उनभमैरक क केकु घा सु गवा। उभन पमक्तु क पेनपेलएकर ररि उ लापा घा - "भेकाएन घेने गतः म पनः"

मुराडा एिम भक्त म भेकाएन एव, वकी भक्त कौपमक्तु भलाप के गुरुवा कृभानन वेल गार पंडित भेकाएन के पीळ-पीळ मा भमान की उर एल पडा

घरी रर पर मा भमान म उनने एक गण के पिडा रुमु ररि। गण के ररिउ की उनमाभुकी वरु गतु घा सु गरै "गारुना मा भमान ग वभिधिुम गानुः"- मुराडा गारुना उर मा भमान भे एपिडा रु, वरु ररै रुठै कौदिर कृ घा, गार ने उम मा भमान भपिडा गण के ररै गन लिया करै उमक गेल मे लिपाए गवा, उ करै उमक परै एने लेगा।

उनभैरक उरै उर म गेरुग। उम ररिकर मर विगार भपेड गव कि वरु कौन कौठे वरु उक विष्टुलव की गारपीवारी भरेरुत रुए उनपुमक्तु के मेडिरि रुभंभार की किमी वमकुा हन नकी घा। उरै क वेगे म ररगउ रुए ररिकर उनभमैरक क पेमक्तु भलापा वरु वरुवा सु गवा- "एगुडुडु गतिः"- मुराडा एगुकी गति भरेरु वरु रुठै कौ उन निमञ्च रुगेवा कि वगे मरुन वेली वरु वमकुा वमकुा उभी मभय उनभमैरक क घा सु गवा- "उपगुगु वरुवउी -- मुराडा एगुका मधगे उपम के गार उनकी मभार भउपुवा नु घा गण उर उरै वा एगु रने का मधगे कराना उनने माभुके भान लिया। मभ, पीगपाग क उनने उरै क गेल भेगेण गण रिया। वरु गण एक एगी का घा। उमपेड लगा उवेरु ररगा रुमु मवा। उम मेपनी उर मुडा ररिकर गार माभुपारंगत पंडित वरु भे ररग पड रुग।

घरी रर पर एक नदी घी। नदी भपेलाम का एक पडु उरै रुमु सु ररुा घा। उम ररिउ की उनभमैरक क घा सु गवा- "मुगभिधति वडुं उरुभुंभुंर विधति" मुराडा ए पेडु उरै रुमु मुवगा, वकी रुभार उमुर करगे। उमुर की उमुर म वेरु भक्त पंडित पडु पर ले गवा। पडु पानी भरेरु गवा उ वेरु ही रुनु लेगा।

कवल उमकी मिडा पानी म गेरु ररु गरै। उभी उरु गुरु-गुरु एर वरु ररु भक्त पंडित क पाम परुगा उ उमैरक उर माभुके वरुवा सु गवा- "भवनाम भेभुंभुं उरुति पंडितः"-- मुराडा मभक्तु का नाम रुठै ररिकर मुण के गेगाल उर मुण के गुरु कर ररि वरु घा सु की उभन गेरुत रुए पर मुएभी का मुण ररग गगान के लिय उमकी मिपा पकरुकर गरुन काए पी। उमक कौष भेकेवल भिर का रिभु सु गवा। ररु पानी भरेरु गरै।

उन पार क मेम तीन ररु गयोरारे परुगिन पर तीन के मेलग-मलग पर भेठेरगय गय। वरु  
उन एरु रुएन रिया गय उरक न मेभिय के घेरु करुकर ऊरु रिया -- "सीगुडी विनमरु" --  
मरुगुडी सीगुडुन वाली वमनुनपरु रीडी कौरुपर के रेएरु री गरं उ उम येरु मु गय --  
"मरुगुडुन विभीरु उरुवुन रीगुगुयुभा" मरुगुडी गरुडु डली रुं वमनुनपरु क भेएडी कौरुपर के  
रुिडु वाली वरुिका री गयी उ उम येरु मु गय - 'रुिडु रीगुगु गरुली रुवनि -- मरुगुडी रुिडु  
वाली वमनुनपरु मरुगु रुं कौरुपरु म यरु रुमु कि तीन की एगरुभरं रुं उरु तीन रीगु की  
रु

भीप : वरुकर-रुिडु रीगु गरु पेरुडु री भरु की गरुडु कौरुवरुकर रुिडु क की रुं कौरुकेरु  
रुिडु रीगुन वरुला मरु रीगु रुं गरुडु रुं

मरुगुडु - विरु कौरु एरु